मानस वंदन सम्मान लब्ध
गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की 247667 (उ.ख.)

गोपाल राजू की चर्चित पुस्तक 'धनवान बनने के चमत्कारिक उपाय' का सार-संक्षेप

धनतेरस - दीपावली और सरलतम उपाय

दीपावली में पूजन का समय

लम्बी तथा क्लिष्ट भाषा वाली पूजा-अर्चना, कर्मकांड अथवा अनुष्ठान आदि से प्रायः हर कोई बचना चाहता है | प्रयास यही होता है की लक्ष्मी जी को रिझाने का कोई सरलतम अथवा शोर्टकट रास्ता मिल जाये | दीपावली पर्व पर लक्ष्मी पूजन की अनेक शास्त्रोक्त विधियाँ हैं , परन्तु वह सर्वसाधारण की समझ से सर्वथा दूर हैं | लक्ष्मी पूजन के यह उपाय सरल-सुगम हैं और हरकोई इनको सरलता से कर सकता है | सर्वप्रथम दीपावली पूजन का समय अपने बुद्धि-विवेक से सुनिश्चित कर लें |

श्री राजधानी पंचांग के अनुसार २६ अक्तूबर कार्तिक कृष्ण अमावस्या बुधवार रात्रि में १ बजकर २५ मिनट तक अमावस्या काल में महालक्ष्मी पूजन मान्य रहेगा | चित्रा नक्षत्र रात्रि ९ बजकर ४३ मिनट तक रहेगा फिर स्वाति नक्षत्र भोग करेगा | दोनों ही श्रेष्ठ संज्ञक कहे गए हैं | लक्ष्मी पूजन में व्यापारीगण धनु लग्न को अच्छा मानते हैं | यह समय दिन में १०/२८ से १२/३१ तक रहेगा | इस दिन रात्रि में १७/३७ से २४/६ तक उद्वेग, शुभ, अमृत और चर के चार चोघडिया

मुहूर्त हैं | इनमे प्रदोष काल १७/३७ से २०/१ तक लक्ष्मी पूजन का शुभ समय है | मिथुन लग्न २०/३९ से २२/५२ तक है | इसमें अमृत चोघडिया २०/५१ से २२/२८ तक समस्त गृह पूजन के साथ-साथ बही-बसना, खाता, कलमदान, रोकड़ पूजन आदि के लिए शुभ है |
निशाकाल में महानिशीथ काल २३/३९ से २४/३१ तक का लक्ष्मी सम्बन्धी उपायों के लिए इस दीपावली पर्व में शुभ फलदायक सिद्ध होगा |

दीपावली में लक्ष्मी पूजन का महत्व

तंत्रशास्त्र तथा अनेक धार्मिक ग्रंथों में दीपावली पर्व में लक्ष्मी साधना के अनेक उपाय बताये गये हैं। लक्ष्मी पूजन का इस पर्व पर विशेष महत्व है। पूरे वर्ष साधक इस पर्व में पड़ने वाली महानिशा काल की प्रतीक्षा करते हैं और अपने-अपने बुद्धि-विवके तथा यथा संभव साधनों से लक्ष्मी जी की कृपा पाने के क्रम-उपक्रम करते हैं।

कार्तिक कृष्णा अमावस्या को भगवती महालक्ष्मी विश्व भ्रमण पर भगवान विष्णु के साथ निकलती हैं तथा जहॉ अपनी पूजा-उपासना होते हुए देखती हैं वहॉ वह अपना निवास बना लेती हैं। लक्ष्मी जी को रिझाने में साधक की आस्था और संयम का विशेष महत्व होता है।

'रुद्रयामल तंत्र' में लिखा है कि जब सूर्य और चंद्रमा तुला राशि में गोचरवश भ्रमण करते हैं तब लक्ष्मी साधना करने से धन-धान्य की प्राप्ति होती है।

'शक्ति संगम तंत्र' के काली खण्ड में अनेक विशिष्ट कालों का वर्णन मिलता है जब लक्ष्मी जी की कृपा पाने के उपाय किए जाते हैं। परंतु उनमें दीपावली की महारात्री को विशेष रुप से लक्ष्मी साधना के लिए प्रभावशाली बताया गया है।

'श्री विद्यार्णव तंत्र' ने कालरात्रि को एक महाशक्ति माना गया है। कालरात्रि मातृकाओं का भी इस ग्रंथ में उल्लेख मिलता है। कालरात्रि शक्ति को श्री विद्या का अंग कहा गया है। श्री विद्या की उपासना से सुख, सौभाग्य और समृद्धि की स्वतः ही प्राप्ति होने लगती है। मंत्र शास्त्र में इसको गणेश्वरी कहा गया है, जो ऋद्धि-सिद्धि को देने वाली है।

'मंत्र महोदधि' में इनके विषय में लिखा है कि उदीयमान सूर्य जैसे आभा वाली, बिखरे हुए बालों वाली, काले वस्त्रों वाली, त्रिनेत्री, चारों हाथों में दण्ड, लिंग, वर तथा भुवन को धारण करने वाली, आभूषणों से सुशोभित, प्रसन्नवदना, देवगणों से सेवित तथा कामवाण से विकसित शरीर वाली मायारात्रि कालरात्रि का ध्यान करता हूँ।

'मुहूर्त चिन्तामणि' तथा ज्योतिष के अनेक ग्रंथों में इस रात्रि का महत्व इस प्रकार से मिलता है, 'दीपावली की रात्रि को आधी रात्रि के बाद जो दो मुहूर्त का समय है उसको महानिशा

काल कहते हैं। उस काल में आराधना, साधना, जप-तप आदि करने से अक्षय लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। इस काल में सूर्य तथा चंद्र तुला राशि में होते हैं। इस राशि के स्वामी शुक्र को धन-धान्य तथा ऐश्वर्य का प्रतीक माना गया है।'

कैसे करें लक्ष्मी पूजन

आचमन और प्राणायाम करके दांए हाथ में जल, कुमकुम, अक्षत तथा पुष्प लेकर संकल्प करें, 'आज परम मंगल को देने वाले कार्तिक मास की अमावस्या को मैं (अपना नाम बोलें), उपनाम (यदि कोई हो तो वह बोलें), गोत्र (अपना गोत्र बोलें) चिर लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए नीति पूर्वक अर्थउपार्जन करते हुए सभी कष्टों को दूर करने, अपनी अभिलाषा की पूर्ति के लिए, आरोग्य तथा आयुष्य की वृद्धि के साथ राज्य, व्यापार, उद्योग आदि में लाभ मिले, इसलिए गणपति, नवग्रह, महाकाली तथा महासरस्वती का श्रद्धाभाव से पूजन करता हूँ।'

इसके बाद हाथ में ली हुई सामग्री धरती पर छोड़ दें। तिलक लगाएं तथा कलावा बाधें। गणपति भगवान का पूजन करें। उन्हें स्नान करवाकर जनेऊ, वस्त्र, कलावा, कुमकुम, केसर, अक्षत, गुलाब, अबीर आदि चढ़ाकर गुड़ तथा लडडू का नैवेद्य अर्पित करें। फिर गणपति देव का ध्यान करें -

ॐ गणपतये नमः एक दन्ताय विद्‌महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ति प्रचोदयात्‌।।

इसी प्रकार नवग्रह का ध्यान करें -

ब्रह्मामुरारी त्रिपुरान्तकारी भानु शशि भूमि सुतो।
बुधश्च गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतवः सर्व ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु।।

महालक्ष्मी पूजन के लिए लक्ष्मी गणेश वाले चांदी के सिक्के को थाली में रखें। आवाहन के लिए अक्षत अर्पण करें। जल से तीन बार अर्घ्य दें, स्नान करायें फिर दूध, दही, घी, शक्कर तथा शहद से स्नान करा कर पुनः शुद्ध जल से स्नान करायें। कलावा, केसर, कुमकुम, अक्षत, पुष्प माला, गुलाल, अबीर, मेंहदी, हल्दी, कमलगटटे, फल तथा मिष्ठान अर्पण करके एक सौ आठ बार एक-एक नाम बोलकर अक्षत चढ़ाएं -

ॐ अणिम्ने नमः। ॐ महिम्ने नमः। ॐ गरिम्ने नमः। ॐ लघिम्ने नमः। ॐ प्राकाम्ये नमः। ॐ इशितारो नमः। ॐ वशितारों नमः।

इसके बाद मिष्ठान प्रसाद स्वरुप वितरण करके पान, सुपारी, इलाइची, फल चढ़ायें और प्रार्थना करें -

नमस्तेस्तु महामाये श्रीपीठे सुर पूजिते।
शंख, चक्र, गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते।।

अपने घर, कार्य स्थल, दुकान आदि के कलम, हथियार, वहीखाते, डायरी आदि नित्य प्रायः प्रयोग होने वाले अन्य साधनों में कलावा बाधें तथा उनपर पुष्प, अक्षत तथा कुमकुम अर्पण करके बोलें -

ॐ महाकालिये नमः

अन्त में आरती, पुष्पाजली अर्पित करके अपने परिजनों को प्रणाम करें, उनका आर्शिवाद लें। चांदी के इस सिक्के को लाल कपड़े में लपेटकर अपनी पूजा अथवा तिजोरी में रख दें।

लक्ष्मी प्राप्ति के सरल उपाय

लक्ष्मी, ऐश्वर्य, भोग-विलास, सुख-समृद्धि, आरोग्य, आयुष्य आदि के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने बुद्धि-विवेक से कोई न कोई कर्म अवश्य करता रहता है। यदि अपेक्षित परिणामों से आप संतुष्ट नहीं हुए हों तो इस दीपावली में संयम और आस्था से यह उपाय भी करके देखें। संभवतः आपको अपनी कार्य सिद्धि के लिए सरल-सुगम मार्ग दर्शन मिल जाए।

उपाय -1

दीपावली में की जाने वाली लक्ष्मी साधनाओं में शंख कल्प उपाय एक प्रभावशाली उपाय है। यह जितना अधिक प्रभावशाली है उतना ही इसका उपाय सरल तथा सर्वसाधारण की पहुँच के अन्दर है। वैसे तो प्रत्येक शंख पवित्र है और देव विग्रह रुप में पूजित है। परन्तु इनमें से दक्षिणावर्ती शंख, जो कि सर्वथा सुलभ नहीं है, लक्ष्मी-नारायण स्वरुप माना गया है।

शंख चार वर्णों में विभक्त है। यह वर्ण उनके रंग के अनुसार सुनिश्चित किये गये हैं। श्वेत् शंख सर्वाधिक शुभ माना गया है। शंख को यदि सेंधा नमक मिश्रित पानी में कुछ समय के लिए डुबो कर रख दिया जाए तो उसका अस्तित्व खुल जाता है। नकली शंख, जो कि प्लास्टिक, चीनी मिटट्री आदि के बनाए जाते हैं, काले पड़ जाते हैं जबकि असली शंख इस पानी में हफ्तों पड़े रहने के बाद भी अपनी वास्तविक आभा नहीं खोते।

शंख को इस प्रकार रखा जाता है कि उसका पेट ऊपर की ओर और पूंछ वाला भाग सदैव उत्तर दिशा में रहे। अभिमंत्रित करके चावल शंख में भरकर रखने से लक्ष्मी जी की कृपा बनी रहती है। धन तेरस से लेकर दीपावली तक के तीन दिनों में मैं शंखकल्प अपने प्रिय पाठकों को करवाता रहता हूँ। इस दीपावली में आप भी इन उपायों से लाभ उठाएं।

धन तेरस को एक अच्छा बड़ा शंख उपलब्ध करें। अच्छा हो आपको दक्षिणवर्ती शंख सुलभ हो जाए। इसे गोमूत्र से शोधन करें अर्थात् गोमूत्र में 108 बार डुबोएं और निकाल लें। अंतिम बार शोधन के पश्चात् इसे पोछ कर सुखा लें और पंचामृत (गंगाजल, गोघृत, मधु, मिश्री और दही) से स्नान कराएं। इस पंचामृत में तुलसी दल नहीं आता, यह ध्यान रखें। स्नान के बाद इस पर गोघृत का लेपन करें। अपनी श्रद्धा, आस्था और सुविधानुसार इसकी पंचोपचार, दशोपचार, षोडोशोपचार आदि से पूजा-अर्चना तथा धूप, दीप, आरती आदि करें। मन में निरंतर यह भाव बनाएं रखें कि आप शंख की नहीं बल्कि साक्षात् लक्ष्मी-नारायण जी की पूजा-अर्चना करके उन्हें स्थाई रुप से निवास के लिए याचक बन कर याचना कर रहे हैं। भवन में जिस पवित्र स्थान पर आपको शंख स्थापित करना है वह सुनिश्चित कर लें, क्योंकि अगले वर्ष की धनतेरस तक पूरे वर्ष शंख यहीं पर ही विराजमान रहेगा। इस स्थान पर थाली अथवा लकड़ी के पटरे पर विनायक यंत्र हल्दी से अंकित करें। जो साधक सक्षम हैं वह यंत्र चांदी के भी बनवा सकते हैं अथवा प्राणप्रतिष्ठित यंत्र केन्द्र से भी प्राप्त कर सकते हैं।

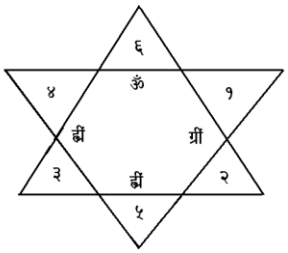

यंत्र चित्रित करते समय निम्न मंत्र का निरंतर जप करते रहें :

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे सर्वकार्येषु सर्वदा।।

इस यंत्र पर शंख स्थापित कर दें और ग्यारह माला निम्न मंत्र की जप करें :

ॐ गं गणपतये सर्वविघ्नहराय सर्वाय
सर्वगुरवे लंम्बोदराय ह्रीं गं नमः।।

आपका श्री शंख अब पूजा के लिए तैयार है। इसी प्रकार से अन्य अनेकानेक विग्रह, धातुओं के विभिन्न दुर्लभ सिक्के, वनस्पतियां, यंत्र, रत्न आदि भी अपने प्रयोजन स्वरुप आप दीपावली के शुभ महूर्त में पूजन कर अपने प्रयोग में ला सकते हैं। धनतेरस से दीपावली तक के समय में शंख का निम्न प्रकार से पूजन करें :

सर्वप्रथम उपाय प्रारंभ करने का एक शुभ समय निश्चित कर लें। शुक्र की होरा धन संबधी उपायों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। शंख के सामने एक थाली में चावल तथा नागकेसर ले कर बैठ जाएं। निम्नलिखित शंख गायत्री मंत्र जप करते रहें और प्रत्येक जप के साथ अग्नि में आहुति देने की तरह चावल और नागकेसर शंख में छोड़ते रहें।

शंख गायत्री मंत्र

ॐ शंखाय च विद्‌महे पावमानाय च धीमहि,
तन्नो शंखः प्रचोदयात्‌।।

उपाय में जप संख्या कोई निश्चित नहीं है। प्रयोजन यह है कि तीसरे अर्थात्‌ अंतिम दीपावली वाले दिन आपकी लक्ष्मी पूजन के समय शंख गायत्री मंत्र से चावल तथा नागकेसर से पूरा भर जाए। यह आप अपनी दीपावली में होने वाली पारंपरिक पूजा से पूर्व अथवा उत्तरार्ध में कभी भी पूर्ण कर सकते हैं। पूजा के अंत में शंख को इसी स्थिति में स्वच्छ कपड़े से ढक कर रख दें। तदन्तर में शंख गायत्री मंत्र जपें और इसमें से चावल उठाकर इसी में छोड़ दें। पूजा के बाद शंख निरन्तर ढक कर रखें। पूरे वर्ष इस उपाय से आपके परिवार में सुख, वैभव अर्थात्‌ लक्ष्मी-नारायण जी की कृपा बनी रहेगी।

उपाय -2

यत्र योगेश्वरः कृष्णो तत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो-भुतिर्ध्रुवा नितिर्मतिर्मम्।।

गीता का यह मंत्र धन-धान्य की वृद्धि में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। इस मंत्र के अनेक उपाय हैं। दीपावली के शुभ मुहूर्त में आप भी एक सरल सा उपाय अवश्य करें।

प्रस्तुत उपाय ऋषियों के ज्ञान, 'मा गृधः' तथा गीता के निष्काम काम पर आधारित है। उपाय के साथ-साथ यदि आप मीठी एवं प्रिय वाणी का भी प्रतिपादन करते हैं, कठोर, रुखे तथा तीखे व्यंग वाणों से बचते हैं तथा वैमनस्य, ईर्ष्या तथा द्वेष भावना से सर्वथा दूर रहते हैं तो उपाय के फलीभूत होने में लेश मात्र भी विलंब नहीं रहता। परंतु यह अपनाना इतना सरल नहीं है तथापि् प्रयास कर देखें पता नहीं लक्ष्मी जी की आप पर किस विधि से कृपा हो जाए।

छोटे-छोटे दक्षिणावर्ति शंख सस्ते और सरलता से मिल जाते हैं। प्रयास करके ऐसे 18 शंख आप धनतेरस में उपलब्ध कर लें। दीपावली महानिशा लक्ष्मी पूजन काल से यह उपाय अनवरत 18 सोमवार तक करें, अक्षय लक्ष्मी की आप पर पूरे वर्ष कृपा बनी रहेगी।

लक्ष्मी पूजन काल में आप उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठ जाएं। गीता का उपरोक्त मंत्र 18 बार श्रद्धा से जप करें। दीपावली से पड़ने वाले अगले सोमवार से इसी प्रकार उत्तर की ओर मुँह करके 18 बार मंत्र जप करें और प्रत्येक बार एक शंख में हवन में दी जा रही आहुति की तरह इसमें चावल छोड़ दें। इसी दिन चावलों से भरे शंख को किसी कुएं, तालाब अथवा नदी आदि में कच्चा सूत बांधकर लटका दें। ध्यान रखें कि शंख को लटकाना है, जल में विसर्जित नहीं करना। सूत कुछ समय में गल जाएगा और शंख स्वयं ही पानी में समां जाएगा। उपाय में यह ध्यान रखना है कि दीपावली के बाद पड़ने वाले 18 सोमवार में ही यह उपाय पूर्ण हो। प्रयोग काल में कहीं बाहर जाना हो तो अन्य स्थान पर भी यह कार्य संपन्न कर सकते हैं। यदि नित्य 18 बार उक्त मंत्र का आप जप भी कर लेते हैं तब परिणाम और भी संतोषजनक मिलने लगेंगे।

उपाय -3

धन, सुख-समृद्धि पूर्व जन्म के संस्कारवश तो मिलती ही है। वर्तमान जन्म के क्रियमाण कर्मों से भी कुछ अंश हम अवश्य प्राप्त करते हैं। यह बात सबने एक मत से स्वीकार की है। तंत्र शास्त्रों में वर्णित 64 योगनियों का नाम प्रत्येक तंत्र साधक जानता है। इन योगिनियों तथा बावन वीरों में एक सिद्ध महावीर घण्टा-कर्ण भी हैं। आम भाषा में यह बेताल नाम से चर्चित है। जैन धर्म तंत्र में जैन धर्मावलम्बी मानते हैं कि जितने समय में घण्टे की ध्वनि साधक सुनें उससे पूर्व ही

महावीर चमत्कार दिखा देते हैं। ऐसे महावीर का एक सरलतम उपाय धन की कामना करने वाले साधकों के लिए लिख रहा हूँ।

दीपावली से तीन दिन पूर्व अर्थात् धनतेरस के दिन से यह उपाय प्रारंभ करें। सर्वप्रथम धण्टा-कर्ण लक्ष्मी सिद्ध विनायक मंत्र पढ़कर कंठस्थ करलें -

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ठं ॐ घण्टाकर्ण लक्ष्मी पूरय पूरय सौभाग्य कुरु कुरु स्वाहा।।

इस प्रयोग में 40, 42 तथा 43 संख्या का विशेष प्रयोजन है। यह संख्या क्यों है, यह अलग विषय है।

धनतेरस के दिन 40 मंत्र जप करके गूगुल तथा चंदन के बुरादे से अग्नि में 40 आहुतियां दें। यह कार्य कठिन अवश्य सिद्ध होगा परंतु यदि किसी की सहायता भी ले लें तो यह सब सरल बन जाएगा। दूसरे, सहायक को भी इसका पुण्य फल मिलेगा। इसी प्रकार अगले दिन उक्त मंत्र 42 बार जपते हुए उक्त सामग्री में काले तिल मिला कर अग्नि में 42 आहुतियां दें। तीसरे अर्थात् दीपावली के दिन इसी प्रकार चंदन, गूगुल, तिल में शक्कर मिलाकर 43 आहुतियां मंत्र जपकर अग्नि में हविष्य स्वरुप अर्पण करें। तीन दिन इन संख्याओं में मंत्र जपकर तथा अग्नि में इन संख्यायों में आहुतियां देने से घण्टाकर्ण जी की कृपा आप पर बनी रहेगी तथा अक्षय लक्ष्मी पूरे वर्ष आपके घर में स्थाई निवास करेंगी। यदि आपमें संयम और शक्ति है तो तीन दिन जप संख्या क्रमशः 40, 42 और 43 मालाएं रखें, प्रभाव अनन्त गुना बढ़ जाएगा।

मानस वंदन सम्मान लब्ध
गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की 247667 (उ.ख.)
फोन : (01332) 274370
मोः 09760111555
website : www.astrotantra4u.com
E-mail:gopalraju12@yahoo.com